IJSSRA | ISSN: 3107-6238
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2

वाराणसी जिले में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि एवं कार्यभार का विश्लेषणात्मक अध्ययन

वंदना विश्वकर्मा[1] & प्रोफेसर मीरा पाल[2]

[1]शोधार्थी, उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत
ई-मेल: vandna10688@gmail.com
[2]प्रोफेसर, उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17317450

Accepted on: 28/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांश:

वर्तमान अध्ययन वाराणसी जिले की आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं कार्यभार का विश्लेषण करने हेतु किया गया। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि कार्यकर्त्रियाँ किन परिस्थितियों में कार्य करती हैं, उन्हें क्या-क्या समस्याएँ होती हैं, और उनका कार्यभार उनकी कार्यक्षमता को किस प्रकार प्रभावित करता है। यह अध्ययन वर्ष 2022 से 2024 तक काशी विद्यापीठ ब्लॉक में किया गया, जिसमें कुल 574 आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ सम्मिलित की गईं। डेटा एक स्व-निर्मित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्र किया गया तथा विश्लेषण के लिए प्रतिशत और आवृत्ति वितरण विधियों का उपयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश कार्यकर्त्रियाँ (लगभग 48%) को 11–15 वर्षों का अनुभव है और वे अपने कार्य के प्रति समर्पित हैं। परंतु, 80% से अधिक कार्यकर्त्रियों ने अतिरिक्त कार्यभार और सुविधाओं की कमी की शिकायत की। लगभग 93% कार्यकर्त्रियों ने कार्यभार को अत्यधिक बताया, जबकि 83% अपने वेतन से असंतुष्ट पाई गईं। अधिकांश केंद्रों में आवश्यक संसाधनों, सड़क सुविधा, और प्रशासनिक मार्गदर्शन का अभाव पाया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ ICDS योजना की मुख्य कड़ी होते हुए भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं। उनका कम वेतन, अधिक कार्यभार, संसाधनों की कमी तथा सामाजिक दबाव उनके कार्य निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। अध्ययन के आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि कार्यकर्त्रियों का मानदेय बढ़ाया जाए, कार्यस्थल की सुविधाएँ सुधारी जाएँ, तथा प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक सहयोग को सुदृढ़ किया जाए ताकि ICDS योजना के लक्ष्य प्रभावी रूप से प्राप्त हो सकें।

मुख्य शब्द: *आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, वाराणसी, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, कार्यभार, आईसीडीएस, महिला सशक्तिकरण.*

प्रस्तावना:

भारत में बच्चों और महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चलाई गई हैं। इन्हीं में से एक प्रमुख योजना है **समेकित बाल विकास सेवा योजना (ICDS)**, जिसे भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 1975 को प्रारम्भ किया था (आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों हेतु प्रशिक्षण पुस्तक, 2005)। इस योजना का मुख्य उद्देश्य छह वर्ष तक के बच्चों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं तथा किशोरियों के स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा में सुधार करना है (जाटिलाल उराँव, 2017)। आज़ादी के बाद बच्चों और महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति को सुधारने के लिए भारत सरकार ने कई कार्यक्रम आरंभ किए, जैसे – बालवाड़ी, विशेष पोषण कार्यक्रम, परिवार कल्याण कार्यक्रम आदि (व्याज़ोक्य, 2017)। किंतु 1971 तक कोई समन्वित नीति उपलब्ध नहीं थी। इसी कारण पंचम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत बच्चों में कुपोषण, रूग्णता, शिशु मृत्यु दर तथा शिक्षा की अक्षमता को कम करने हेतु ICDS की शुरुआत की गई। इस योजना के संचालन के लिए प्रशासनिक संरचना के विभिन्न स्तर बनाए गए—केंद्र स्तर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राज्य स्तर पर निदेशक (ICDS), जिला स्तर पर **जिला कार्यक्रम अधिकारी (DPO)**, खंड स्तर पर **बाल विकास परियोजना अधिकारी (CDPO)** तथा ग्राम स्तर पर **आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका** इस योजना को क्रियान्वित करती हैं (जोशी, 2018)। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता इस योजना की **मुख्य कड़ी** हैं। वे लाभार्थियों तक सरकारी सेवाएँ पहुँचाने का कार्य करती हैं और बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य परीक्षण, पूरक पोषण वितरण, परिवार कल्याण सेवाएँ, टीकाकरण, महिला समूह निर्माण और प्राथमिक शिक्षा जैसी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाती हैं (डी. सुरेश एवं बी. शरीफा, 2020)। इसके अतिरिक्त वे सर्वेक्षण, रिकॉर्ड संधारण, पोषण स्थिति की निगरानी, और प्राथमिक उपचार जैसे कार्य भी करती हैं (गुप्ता, 2019)। इन सभी कार्यों को सीमित संसाधनों और समय में पूरा करना कठिन होता है। परिणामस्वरूप, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को अधिक कार्यभार, कम मानदेय, सामाजिक दबाव और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (राज एवं अन्य, 2021; पटेल, नगर एवं जैन, 2013)। साथ ही, उनकी **सामाजिक-आर्थिक स्थिति** भी उनके कार्य निष्पादन को प्रभावित करती है (ज्योति एवं उम्मे, 2021)। पूर्व के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, शहरी कार्यकर्ताओं की अपेक्षा, सीमित सुविधाओं के बावजूद अधिक मेहनत करती हैं (के. रविंदर रेड्डी, 2017; विनोद एवं अन्य, 2019)। इस कारण उनके कार्यभार और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य **वाराणसी जिले** की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की **सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि एवं कार्यभार** का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उन्हें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने के लिए किन उपायों की आवश्यकता है।

शोधविधि एवं प्रक्रिया:

यह अध्ययन वाराणसी जिले के काशी विद्यापीठ ब्लॉक के अंतर्गत वर्ष 2022 से 2024 तक किया गया।

- **नमूना आकार (Sample Size):**
  कुल 574 आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ अध्ययन में शामिल की गईं।
- **नमूना चयन की विधि (Sampling Technique):**
  बहु-स्तरीय (multi-stage) नमूना चयन विधि अपनाई गई और उत्तरदाताओं का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया।
- **डेटा संग्रह उपकरण (Tools Applied):**
  एक स्व-निर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया जिसमें सामाजिक-आर्थिक स्थिति, कार्यभार, वेतन, सुविधाओं, कार्य संतुष्टि, और कार्य संबंधी कठिनाइयों से संबंधित प्रश्न शामिल थे।
- **डेटा संग्रह प्रक्रिया:**
  शोधकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार एवं केंद्रों के दौरे के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई।
- **डेटा विश्लेषण (Data Analysis):**
  डेटा का गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों विधियों से विश्लेषण किया गया। प्रतिशत एवं आवृत्ति वितरण का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं चर्चा:

तालिका 1: आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सामान्य जानकारी

विषय	प्रमुख निष्कर्ष
कार्य दृष्टिकोण	30.6% सकारात्मक, 7.7% औपचारिक, 4.7% नकारात्मक
कार्य अनुभव	48% को 11–15 वर्ष, 45.2% को 16 वर्ष से अधिक
अतिरिक्त कार्यभार	80.5% को अतिरिक्त कार्य
रजिस्टर रखरखाव	97.9% नियमित रूप से रखती हैं
केंद्र सुविधाएँ	95.7% ने सुविधाओं की कमी बताई

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश कार्यकर्त्रियाँ अनुभवी एवं जिम्मेदार हैं, परंतु सुविधाओं की कमी और अतिरिक्त कार्य उनके प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

तालिका 2: कार्य से जुड़ी समस्याएं व कठिनाइयां

विषय	प्रमुख निष्कर्ष
मुख्य समस्याएं	73% को अनेक समस्याएं
असुविधाजनक कार्य	88.9% ने कार्यस्थल को असुविधाजनक बताया
कार्यभार	93.6% ने कार्यभार अत्यधिक बताया
प्रमुख कठिनाई	44.5% आर्थिक, 44.5% सामाजिक कारण
दूरी/पहुँच	80.9% का घर केंद्र से 1 किमी के भीतर, 15% को सड़क सुविधा नहीं

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

कार्यभार और असुविधाजनक वातावरण के कारण कार्यकुशलता प्रभावित होती है। सामाजिक और आर्थिक दबाव भी उनके कार्य प्रदर्शन में बाधक हैं।

तालिका 3: संसाधन एवं सहायता

विषय	प्रमुख निष्कर्ष
पहुँच साधन	96.4% पैदल/साइकिल से आती हैं
स्थानीय सहायता	64.6% को सहायिका से सहयोग
सड़क सुविधा	85% को अच्छी सड़क
कार्य मार्गदर्शन	केवल 15% को निर्देश प्राप्त

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

कार्य के लिए आवश्यक संसाधनों और मार्गदर्शन की कमी स्पष्ट रूप से सामने आई। फिर भी, सहायिकाओं एवं समुदाय के सहयोग से कार्य संपन्न किया जा रहा है।

तालिका 4: वेतन और संतुष्टि

विषय	प्रमुख निष्कर्ष
वेतन सीमा	53.3% को ₹5000–₹6000
कार्य अनुसार वेतन	85% ने अनुपयुक्त बताया
वेतन संतुष्टि	83.1% असंतुष्ट
असंतोष के कारण	कम वेतन, अधिक कार्यभार, संसाधनों की कमी

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

अधिकांश कार्यकर्त्रियाँ अपने वेतन से असंतुष्ट हैं, जिससे उनमें निराशा एवं असंतोष की भावना उत्पन्न होती है।

तालिका 5: समग्र निष्कर्ष

आयाम	निष्कर्ष
अनुभव	अधिकतर को 10 वर्ष से अधिक अनुभव
कार्यभार	निर्धारित से अधिक कार्य
सुविधाएँ	केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं की कमी
वेतन	कार्यानुसार नहीं
संतुष्टि	अधिकतर असंतुष्ट एवं तनावग्रस्त

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित

अध्ययन स्पष्ट करता है कि कार्य के प्रति निष्ठा के बावजूद आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की स्थिति चुनौतीपूर्ण है।

निष्कर्ष:

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि वाराणसी जिले की अधिकांश आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ अनुभवी और समर्पित हैं, किंतु उन्हें अनेक व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपर्याप्त वेतन, अतिरिक्त कार्यभार, संसाधनों की कमी, और प्रशासनिक सहयोग की अनुपलब्धता के कारण उनका कार्य निष्पादन प्रभावित होता है।

सरकार एवं संबंधित विभागों को चाहिए कि—

1. आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों का मानदेय उनके कार्यभार के अनुसार बढ़ाया जाए।
2. केंद्रों पर आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
3. प्रशिक्षण एवं संसाधन सुदृढ़ किए जाएँ।
4. कार्य वातावरण को सहयोगी और सुरक्षित बनाया जाए।

इन सुधारों से आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों का मनोबल बढ़ेगा और ICDS योजना के लक्ष्यों की पूर्ति अधिक प्रभावी रूप से हो सकेगी।

संदर्भ (References):

- सोमानी, अ., शाह, स., पटेल, म., एवं कारमर, प. क. सी. (2023). *भारत के पश्चिमी क्षेत्र के एक जिले में आंगनवाड़ी केंद्रों के प्रदर्शन की तुलना पर अध्ययन*. **जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर,** 20(10), 2255–2259.

- उत्तर प्रदेश सरकार, आईसीडीएस निदेशालय. (2005). *आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों हेतु कार्य प्रशिक्षण मॉडल एवं संदर्भ पुस्तक (खंड-1)*.
- संध्या रानी, एम. सी., एवं कुशा राव, एस. (2013). *मैसूर ज़िले की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका एवं जिम्मेदारियों पर अध्ययन*. **इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस, एनवायरनमेंट एंड टेक्नोलॉजी**, 2(6), 1277–1296.
- जोशी, के., एवं वर्मा, के. (2018). *ग्रामीण आईसीडीएस ब्लॉक में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का ज्ञान एवं उनकी समस्याएँ*. **आई.पी. जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक्स एंड नर्सिंग साइंस**, 6(2), 45–53.
- रेड्डी, के. र. (2017). *शहरी क्षेत्रों में आंगनवाड़ी शिक्षकों की समस्याएँ: हनमकोंडा पर एक अध्ययन*. **इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इकोनॉमिक रिसर्च,** 12(12), 1–10.
- गुप्ता, स. (2019). *भोपाल (म.प्र.) के ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की प्रोफाइल, ज्ञान एवं समस्याओं पर अध्ययन*. **एम.ए.के. हिल पब्लिकेशन, रिसर्च जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस**, 7(3), 112–118.
- उराँव, ज. (2017). *आरंभिक बाल्यावस्था में सुरक्षा एवं शिक्षा*. आगरा: स्टार पब्लिकेशन.
- जोशी, पी. (2013). *एकीकृत बाल विकास सेवाओं के अंतर्गत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के ज्ञान पर मऊ ज़िले के लुंधियाखेड़ा ब्लॉक का अध्ययन* [लघु शोध प्रबंध, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग, प्रौद्योगिकी संस्थान, ओडिशा].
- ज्योति, एच. पी., एवं उम्मे, ह. (2021). *आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर अध्ययन*. **इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT),** 9(1), 130–138.
- सुरेश, डी., एवं शरीफा, बी. (2020). *आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का कार्यभार और समस्याएँ: एक अध्ययन*. **एस.पी.डब्ल्यू.आई. जर्नल फॉर सोशल वेलफेयर**, 3(1), 33–41.
- निकुंज, न. (2020). *ग्रामीण एवं शहरी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की प्रोफाइल, समस्याएँ एवं पोषण संबंधी ज्ञान का मूल्यांकन* [पीएच.डी. शोध प्रबंध]. http://hdl.handle.net/10603/406823
- पटेल, ख., नगर, क., एवं जैन, व. (2013). *आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के ज्ञान एवं कार्य निष्पादन को प्रभावित करने वाले कारकों पर मिश्रित विधि अध्ययन*. **जर्नल ऑफ एडवांस्ड ज़ूलॉजी**, 34(2), 210–218.
- राज, अ., एवं अन्य. (2021). *माताओं के ज्ञान एवं बच्चों की नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को शिक्षित करने पर अध्ययन*. **जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च इन हेल्थकेयर,** 7(1), 85–94.
- विनोद, यू., एवं अन्य. (2019). *मंगलगिरी ग्रामीण क्षेत्र की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय प्रोफाइल एवं ज्ञान का अध्ययन*. **इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ**, 6(8), 3400–3465.
- व्याज़ोक्य, स. (2017). *बच्चों एवं परिवार के प्रबंधन कार्यक्रम*. आगरा: स्टार पब्लिकेशन.